शोध सारांश

स्वयं सहायता समूह लोगों को कई प्रकार के लाभ पहुंचाते हैं, उदाहरण के तौर पर यह समूह के सदस्यों में बचत की भावना का विकास करते हैं। स्वयं सहायता समूह सदस्यों की निर्धनता से मुक्ति तथा आर्थिक स्वावलंबन का रास्ता दिखते हैं, साथ ही ये समूह निर्धन व्यक्तियों के लिए एकता, भाईचारा, साहस, कुरीति निवारण आदि समस्याओं का सांझा मंच भी उपलब्ध कराते हैं। स्वयं सहायता समूह के माध्यम से सदस्यों को न सिर्फ लोकतान्त्रिक कार्यप्रणाली की जानकारी का पता चलता है, बल्कि यह समूह के सदस्यों में चेतना, कौशल, और आत्मविश्वास की वृद्धि होती है। इन समूह के माध्यम से सामाजिक कुरीतियाँ एवं सामान्य समस्याओं पर चर्चा के साथ सुधार के भी कदम उठाये जाते हैं। महिलाओं की सशक्तिकरण के साथ स्वयं सहायता समूह अपने सदस्यों की राजनीतिक चेतना निर्माण तथा जन प्रतिनिधियों से संवाद स्थापित कर समाज में सम्मानित एवं गरिमा पूर्ण जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

इस शोध में स्वयं सहायता समूह को संगठित करने उनके शोषण को रोकने और उन्हें बैंको से जोड़ने की भूमिका निभाते स्वयं सहायता समूह संवर्धन संस्थाओं के रूप में गैर-सरकारी संगठन क्षेत्र के रूप में शामिल किया। ग्रामीण वलांटीयर आदि इन हितधारकों को नाबार्ड की संवर्धनात्मक अनुदान सहायता से समूहों के संवर्धन का कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

मैंने स्वयं सहायता समूह में शोध के दौरान पाया कि यह समूह महिलाओं को सशक्त बनाने एवं उनको आत्मनिर्भर बनाने में सक्षम है इसके सिवाय यह आपस में मिलकर एक गुट बनाकर आम जनता की समस्याओं का सामना करने का आत्मविश्वास जागरूक करता है, और लोगों को स्वावलंबन का रास्ता बताता है। अनेक प्रकार की कुरीतियों, समस्याओं का सामना करने में सक्षम तो बनाता ही है साथ ही यह एकता, अखंडता, भाई-चारा साहस, और आत्मनिर्भर करने में सहयोगी है।

प्रस्तुत शोध में पाया गया कि गैर-सरकारी संस्थाओं की मदद से निर्धन व बेसहारा महिलाएं स्वयं सहायता समूह में संगठित होकर स्वयं आत्मनिर्भर, निर्भीक व स्वतंत्र जीवन व्यतीत कर रही है। महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की विकासात्मक गतिविधियों में काफी महत्वपूर्ण भूमिका है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं शारीरिक श्रम के कामों में जुटी हैं, लेकिन निर्णयन प्रक्रिया में अक्सर महिलाओं की सहभागिता नाममात्र ही रहती थी, लेकिन अब स्वयं सहायता समूह में शामिल होने के बाद उनमें आत्मविश्वास जागृत हो गया है, एवं आने वाली परिस्थितियों को स्वयं डटकर सामना करती हैं। आज वो जीवन से संबन्धित किसी भी निर्णय को लेने में स्वयं सक्षम बनी है। स्वयं सहायता समूह छोटे-छोटे समूहों के द्वारा उद्योग को आरंभ किया। जिसमें आटा चक्की, किराना दुकान, जनरल स्टोर, बकरी पालन, मुर्गी पालन, पापड़-आचार बनाना, मिरची कंडक, भैंस पालन, शेवई मशीन, फूलों की खेती, खाद बनाना आदि शामिल है। यह समूह आज छोटे उद्योगों से विस्तारित होकर बड़े-बड़े समूहों द्वारा कार्यरत हैं।

प्रस्तुत शोध के माध्यम से महिलाओं को स्वयं के प्रति जागरुक एवं आत्मविश्वास की प्रेरणा प्रदान करता है। यह शोध महिलाओं की उन्नति में सहायक है, एवं चलाये गए स्वयं सहायता समूहों को विस्तारण प्रक्रिया में सहायक होगा।